कोनोकार्पस

कोनोकार्पस की दो प्रजातियां हैं 'कोनोकार्पस लेंसीफोलियस' एवं कोनोकार्पस इरेक्टस। यह कोम्ब्रीटेसी पादप कुल का सदस्य है। इसकी पत्तियां लम्बाई में एवं नुकीली नोक वाली होती हैं तथा फल गोल बटननुमा गुच्छों में लगते हैं, इसलिए इसे सामान्य भाषा में 'लेंसलीफ बटनवुड' भी कहते हैं। सोमाली भाषा में इसे 'घालाब' / 'घलब', 'होडेती' तथा अरबी भाषा में 'दमास' कहते हैं। इसकी ऊँचाई 10-20 मी. तक एवं तने की मोटाई 90 सेमी तक हो जाती है।

'कोनोकार्पस लेंसीफोलियस' का मूल उद्भव सोमालिया से है तथा वहां की सूखी नदी घाटियों में बहुतायत से पाया जाता है। यह बालुई, लवणीय तथा कोरल मृदा को सहन कर लेता है इसलिए इसे सोमालिया, तंज़ानिया के समुद्र तटीय क्षेत्रों में भी बहुतायत से लगाया जाता है। इसके अतिरिक्त अरब देशों एवं अफ्रीका महाद्वीप के शुष्क तथा अर्ध-शुष्क जलवायु वाले क्षेत्रों में भी पाया जाता है / उगाया जाता है।

अन्य प्रजाति कोनोकार्पस इरेक्टस उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका के उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में फ्लोरिडा, मेक्सिको से लेकर ब्राज़ील, पेरू तक एवं पश्चिमी अफ्रीका के तटवर्ती क्षेत्रों में सेनेगल से अंगोला तक पाई जाती है। यह लवणीय तटवर्ती क्षेत्रों, समुद्री ज्वारीय क्षेत्रों, लवणीय मृदा युक्त जमीनी क्षेत्रों में जयादा पाया जाता है।

समुद्रतल से 1000 मीटर ऊँचाई तक ऊग सकने की क्षमता के कारण कोनोकार्पस विस्तृत जलवायवीय क्षेत्रों, भूभागों, भूसंरचनात्मक क्षेत्रों में ऊग सकता है।

कोनोकार्पस की पत्तियों में टैनिन पाया जाता है इसलिए यह पशु चारे के रूप में उपयोगी नहीं है न ही इसके फल मनुष्य सहित किसी भी जंतु प्रजाति के खाने योग्य हैं। केवल इसकी नरम पत्तियों को बकरियां खा सकती हैं लेकिन अधिक नहीं, और फूल आने पर मधुमक्खी जैसे कीट इसका रसपान करते हैं। इस पर कीट, सरीसृप, पक्षी छोटे स्तनधारी इत्यादि कोई भी निवास नहीं करते। अर्थात यह अधिकांश जंतु प्रजातियों के लिए न तो भोजन वृक्ष है और न ही आवास वृक्ष है। मूल उद्भव के क्षेत्रों में इस की लकड़ी कोयला बनाने तथा इमारती लकड़ी के लिए काम में आती है।

फूल आने पर इसके परागकण मनुष्यों (एवं अन्य जंतुओं) के श्वसन तंत्र की प्रभावित करते हैं, विशेषकर अस्थमा एवं श्वास रोगियों के लिए ज्यादा समस्या होती है।

इसकी जड़ें जमीन में गहराई तक चारों तरफ फैल जाती हैं और बहुत ताकतवर होती हैं अर्थात वे जमीन में पानी की पाइपलाइनों तक को जकड कर नुकसान पहुंचा सकती हैं (कुछ वर्षों पहले अरब देशों में इसके जड़ों से भूमिगत पाइपलाइनों को नुकसान पहुँचने के कारण इसको हटाने का काम भी किया गया था). पाइपलाइनों के अलावा इसकी जड़ें भूमिगत सीवेज लाइनों को, बिजली-टेलीफोन लाइनों को, और यहाँ तक कि भूमिगत जल प्रवाह (अंडरग्राउंड ड्रेनेज) तक पहुँच कर उनको अवरुद्ध करना, क्षतिग्रस्त करना, अत्यधिक भूजल खींचने जैसे प्रभाव भी उत्पन्न करती हैं।

जमीन से पोषक तत्व एवं जल लेने में यह स्थानीय प्रजातियों के साथ तगड़ा संघर्ष करता है, और उनको हराकर खुद को स्थापित करने की कोशिश करता है। कुल मिलाकर यह स्थानीय / देशज जैवविविधता के लिए बहुत बड़ा खतरा है। इसके कारण स्थानीय पारिस्थितिकी, पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं, खाद्य जाल, पोषण स्तर, जैव-भूरासायनिक चक्र, स्थानीय प्रजातिओं का सामुदायिक संगठन एवं सहसम्बन्ध अत्यधिक नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं।

यह सूखे की स्थितियों में भी आसानी से ऊग जाता है, यह सदाहरित रहने वाला पेड़ है, इसलिए विश्व के अनेक भागों में इसके गुण-अवगुणों पर ध्यान दिए बगैर स्थानीय वानस्पतिक प्रजातियों को नजरअंदाज करके इसे लगाने के लिए लोग रूचि ले रहे हैं।

भारत में यह हमारी बहुउपयोगी स्थानीय प्रजातियों की तुलना में पशु खाद्य, एवं मानव खाद्य के रूप में किसी भी प्रकार से उपयोगी नहीं है, इसे केवल इसके हरे रहने और तथाकथित रूप से 'अच्छा दिखने' के कारण अंधाधुंध तरीके से लगाया जा रहा है। इसमें स्थानीय निकायों, प्रशासन एवं राजनीतज्ञों की रूचि ज्यादा है क्योंकि बीज से अंकुरित नहीं होने के कारण कलम पद्धति से तथा लायरिंग पद्धति से तैयार करते हुए इसकी बिक्री एवं सप्लाई हो रही है। हजारों-लाखों की संख्या में इसके पौधे ख़रीदे जाते हैं, लगाने और मेंटेनेंस का ठेका दिया जाता है और हर स्तर पर कमीशन खाया जाता है। यहाँ तक की हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में भी किसानों को, आदिवासियों को इसके पौधे तैयार करने और उनसे प्रति पौधा 300-400 रुपये में खरीदने का लालच देते हुए कोनोकार्पस उनकी जमीनों पर लगवाया जा रहा है। व्यावसायिक रूप से इसके पौधों की सप्लाई कहीं अधिक तीन-चार गुना रेट पर होती है। चंद पैसों के लालच में हमारे नेता, प्रशासन, स्थानीय निकाय एवं संस्थाएं (नगर निगम, नगर पालिका, नगर परिषद्, ग्राम पंचायतें, निजी एवं सरकारी संस्थान इत्यादि) इस विदेशी प्रजाति को हमारी स्थानीय प्रजातियों के ऊपर सर्वेसर्वा रखते हुए घुसपैठ करवा रहे हैं।

https://www.researchgate.net/publication/343324115_EFFECT_OF_CONOCARPUS_ERECTUS_ON_THE_INFRASTRUCTURE_OF_MISAN_PROVINCE_IRAQ

https://timesofindia.indiatimes.com/city/pune/mass-planting-of-conocarpus-may-be-harmful-say-pune-botanists/articleshow/77238369.cms

https://tribune.com.pk/story/1596450/conocarpus-continues-favourite-despite-hazards

https://www.dawn.com/news/1413186